Q. 1830 ई० की फ्रांसीसी क्रांति के महत्व एवं प्रभावों पर प्रकाश डालें?

Ans:- राजा एवं प्रधानमंत्री इस क्रांति के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। 27 जुलाई को यह क्रान्ति प्रारम्भ हो गयी। नागरिकों एवं सशस्त्र सैनिकों के बीच भीषण संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में सेना न तो तोपों का प्रयोग कर सकी और न ही नागरिकों की मोर्चाबन्दी तोड़ सकी। बहुत-से सैनिक मारे गए। बूर्बो वंश के सफेद झण्डे के स्थान पर क्रान्ति के तिरंगे झण्डे फहराए गए। यह गृह-युद्ध 27 जुलाई तक तीन दिन तक चलता रहा। यह गृह-युद्ध पेरिस तक सीमित रहा। 29 जुलाई को दो सैनिक टुकड़ियां क्रान्तिकारियों से जा मिलीं और क्रान्तिकारियों ने पेरिस पर अधिकार कर लिया। चार्ल्स ने अपने अध्यादेश को वापस लेने की बात कही, परन्तु जनता अब इसके लिए तैयार न थी, फिशर के शब्दों में "सम्राट समर्थकों के आघात का पेरिस निवासियों के तीन दिन के घमासान युद्ध से उत्तर दिया तथा फ्रांस के पुरातन राजवंश का भाग्य सुमाप्त कर दिया।" हेजन ने लिखा है, "यह युद्ध तीन दिन तक चला। यह जुलाई क्रान्ति थी - गौरवपूर्ण तीन दिन।"

चार्ल्स X का सिंहासन परित्याग तथा फ्रांस से पलायन-

जब चार्ल्स की सैन्य शक्ति क्रान्तिकारियों के सामने पराजित हो गयी तो उसने क्रान्तिकारियों से समझौता करना चाहा जैसे कि ऊपर भी कहा चुका है, लेकिन वह अपनी इस कूटनीतिक चाल में असफल रहा। अन्त में 31 जुलाई को चार्ल्स X अपने 10-वर्षीय पौत्र काउण्ट ऑफ चेम्बार्ड के पक्ष में सिंहासन का परित्याग का स्वयं इंग्लैण्ड भाग गया। अन्त में 1836 ई० में आस्ट्रिया में उसकी मृत्यु हो गयी।

(2) 1830 की जुलाई क्रान्ति का महत्व एवं प्रभाव :-
1830 ई० की जुलाई क्रान्ति का यूरोप के विभिन्न देशों पर व्यापक प्रभाव हुआ जिसका वर्णन निम्नलिखित है —

(i) फ्रांस पर प्रभाव :- इस क्रान्ति परिणामस्वरूप फ्रांस की राजनीति में अनेक परिवर्तन आए जिनका विवरण निम्नलिखित है :

(क) सत्ता परिवर्तन — फ्रांस में बूर्बो वंश का अन्त हो गया। क्रान्तिकारियों ने ऑर्लियन्स वंश के राजकुमार लुई फिलिप को गद्दी पर बैठाया, जो 1848 ई० तक राजा रहा।

(ख) दैवी अधिकार की समाप्ति तथा जनतन्त्रीय शासन की स्थापना — इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ कि राजा के दैवी अधिकार का सिद्धान्त समाप्त हो गया उसके स्थान पर जनतंत्रीय सिद्धान्तों की स्थापना हुई। लुई फिलिप का राज्याभिषेक इस सिद्धान्त के आधार पर हुआ कि 'फ्रांस की जनता का राजा भगवान की कृपा व राष्ट्र की इच्छा से हुआ है'। इस प्रकार फ्रांस में निरंकुशतन्त्र की जगह जनता की प्रभुसत्ता एक बार पुनः स्थापित हो गयी। हेजन के शब्दों में "बूर्बो वंश के श्वेत ध्वज का स्थान तिरंगे ध्वज ने ले लिया। इस प्रकार पूर्वस्था समाप्त हुई और लुई फिलिप का राज्यकाल अब आरम्भ हुआ।"

(ग) मध्य वर्ग की विजय — जुलाई क्रान्ति मध्यवर्ग की विजय थी। इस वर्ग ने कड़े संघर्ष के द्वारा संवैधानिक घोषणा-पत्र के क्षेत्रों को दूर किया तथा धर्म गुरुओं एवं कुलीन के शासन को समाप्त किया।

(ii) यूरोप पर प्रभाव :-

(क) 1830 ई० की क्रान्ति से मैटरनिख की प्रतिक्रियावादी व्यवस्था को भारी आघात पहुँचा। 1830 ई० में फ्रांस में क्रान्ति के समय प्रतिक्रियावादी दो राष्ट्रों के नेताओं का यह अनुमान था कि लुई फिलिप के विरुद्ध यूरोपीय शक्तियों का एक गुट संगठित हो जाएगा और गुट के हस्तक्षेप से लुई फिलिप सफल सफल नहीं हो पाएगा, लेकिन प्रतिक्रियावादी राष्ट्रों विशेषकर मैटरनिख का यह अनुमान गलत निकला। मित्र-राष्ट्रों से मैटरनिख को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। रूस उस समय पोलैण्ड के विद्रोह को दबाने में लगा था, आस्ट्रिया इटली की क्रान्ति को दबाने को लगा था, प्रशा उत्तरी जर्मनी की क्रान्ति को शान्त करने में फंसा था तथा इंग्लैण्ड में पमर्स्टन प्रधानमंत्री था जिसकी सहानुभूति लुई फिलिप के साथ थी। दूसरी ओर फिलिप ने भी यूरोप के निरंकुश राजाओं के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाया। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोप के निरंकुश राजाओं ने फिलिप को फ्रांस का वैध शासक स्वीकार किया। अतः मैटरनिख व्यवस्था को इससे भारी आघात पहुँचा। हेज के शब्दों में "फ्रांस में जुलाई क्रान्ति की सहसा सफलता का तात्कालिक प्रभाव यूरोप में सर्वत्र अनुभव किया गया। अनुदारवादी भयभीत हो गए उदारवादियों का उत्साहवर्धन हुआ।"

(ख) वियना व्यवस्था पर आघात - जुलाई क्रान्ति के द्वारा 1815 ई० में वियना में स्थापित राजनीतिक व्यवस्था को बड़ा धक्का लगा। इस क्रान्ति का प्रभाव बेल्जियम पर भी पड़ा। वहां एक भयंकर क्रान्ति छिड़ी और लन्दन सम्मेलन में इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस आस्ट्रिया तथा प्रशा को सामूहिक रूप से बेल्जियम की स्वतन्त्रता को स्वीकार करना पड़ा। इस तरह वियना सम्मेलन की

व्यवस्था की प्रथम कड़ी टूट गयी।

1830 ई० की जुलाई क्रान्ति वास्तव में 1789 ई० की राज्य-क्रान्ति की पूरक थी। लिप्सन के अनुसार "1789 ई० की क्रान्ति में जो कमी रह गयी थी वह 1830 ई० की क्रान्ति से पूरी हो गयी, सन् 1830 की क्रान्ति के फलस्वरूप स्वतन्त्रता, समानता, वैधानिक शासन, धर्म-निरपेक्ष, आदि क्रान्तिकारी भावनाओं की नींव सुदृढ़ हो गयी" इस क्रान्ति ने विएना के न्यायोचित राजता के सिद्धान्त तथा राजसत्तावादियों के कार्यक्रम को आघात पहुँचाया तथा सामन्तों तथा उच्च पादरियों के विशेषाधिकारों को बड़ी ठेस पहुंचाई। इस क्रान्ति की सबसे बड़ी कमी यह रही कि इससे शासन में कोई विस्तार नहीं हो पाया लेकिन यह बात अपने में बहुत महत्वपूर्ण थी कि सत्ता सम्राट के हाथों से निकलकर जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में आ गयी। यह क्रान्ति नवजीवन के संचार और जनतन्त्रीय आन्दोलन के लिए प्रेरक सिद्ध हुई।

यूरोप के अन्य देशों में 1830 ई. की फ्रांसीसी क्रान्ति का प्रभाव :- 1830 ई० की फ्रांसीसी क्रान्ति का समाचार बिजली की तरह समस्त यूरोप में फैल गया। यूरोप का राजनीतिक वातावरण पुनः क्रान्तिकारी हो गया। जगह-जगह जन आन्दोलनों की लहर उमड़ पड़ी। बेल्जियम, जर्मनी, इटली, और पोलैण्ड, आदि देशों में क्रान्तियों की आग भड़क उठी।